प्रेम जहाँ परमेश वहाँ

-लीलावती भागवत

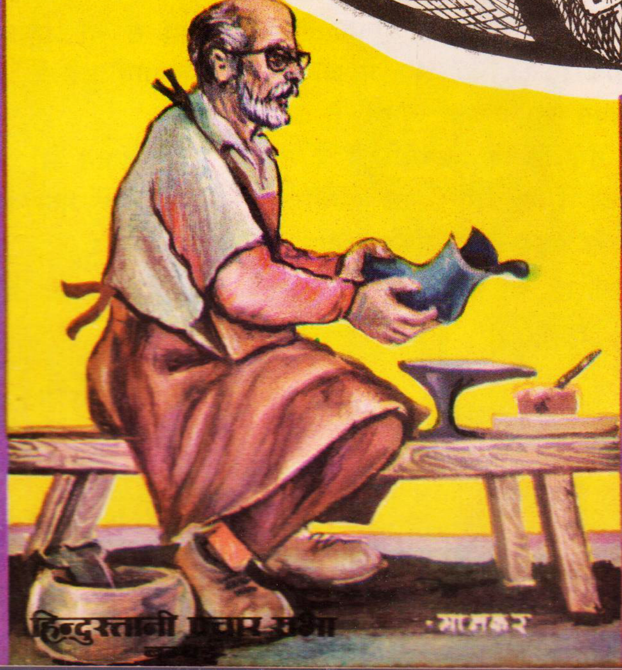

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चोंकी कहानियाँ

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और वैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

प्रेम जहां परमेश वहां

लीलावती भागवत

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

मूल्य :

कर दो रुपये

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००००१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८०००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्न सलाए, मद्रास-६०००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७, महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

प्रेम जहां— परमेश वहां

रूस देश का एक छोटा-सा गांव। उसमें मार्तिन नाम का एक मोची रहता था। मार्तिन का घर, घर क्या था, एक छोटा-सा कमरा था—बिलकुल नीचेवाली मंजिल पर। कमरे में जो खिड़की थी उससे बाहर का सब कुछ दिखाई देता था। उस खिड़की से मार्तिन आने-जाने वालों के पैर देख सकता था और उन पैरों से वह पहचान सकता था कि रास्ते पर कौन जा रहा है। कैसे? बिलकुल आसान बात थी। उन लोगों के जूते तो मार्तिन ही बनाता था—पूरे गांववालों के जूते!

...अरे, यह जूता तो मैंने ही बनाया है... हां, इस जूते की मरम्मत तो अभी-अभी की थी मैंने... यह, यह तो सरकारी जूता है। मेरे हाथ जैसी सिलाई थोड़े ही है इसकी। मैं कभी ऐसा जूता नहीं बनाऊंगा... और इस छोटी लड़की की यह चप्पल? इसकी सिलाई तो मेरे ही हाथ की है... ओह, इस बूढ़े मुन्शी जी का जूता तो फटने को आया है। हो सके तो दूसरा जूता तैयार रखना होगा इनके लिए। एक-दो महीने में तो आ ही जायेंगे नये जूते के लिए... यह सेठ जी तो इतने मक्खीचूस हैं कि पुराने जूते पर नये चमड़े का पेबन्द लगवाते रहते हैं हमेशा... मार्तिन यही सब सोचता अपने काम में लगा रहता।

उसके पास काम भी खूब आता था। लोग कहते, "अरे भाई, जूता बनवाना है तो तुम मार्तिन के हाथ से ही बनवा लो।"

"क्यों ?"

"वह काम बहुत अच्छी तरह से करता है।"

"हां, और माल भी अच्छा इस्तेमाल करता है।"

"और कीमत देखो, कितनी कम बताता है।"

गांववाले एक और बात के लिए मार्तिन से खुश थे। उस पर पूरा भरोसा किया जा सकता था। समझ लो, किसी ने उससे कहा, "भाई, मेरे लिए अगले शनिवार तक जूता जरूर बना देना," और मार्तिन को लगा कि उस दिन तक जूता बन नहीं सकेगा तो वह साफ-साफ कह देता, "नहीं भैया, अगले शनिवार तक जूता नहीं बन सकता।" झूठमूठ वचन देना उसे पसंद नहीं था।

मार्तिन वैसे तो बहुत भला आदमी था, लेकिन अब बुढ़ापे में बराबर सोचता था कि मैंने ईश्वर की भक्ति नहीं की, कुछ दया-धरम नहीं किया।

शुरू-शुरू में वह एक दूकान में काम करता था। वह नौकरी थी दिन भर की। उसकी बीवी मर गयी थी और एक छोटा बच्चा छोड़ गयी थी। उसकी बाकी संतानें बचपन में ही गुजर गयी थीं। मार्तिन ने सोचा, "अब यह इतना-सा बच्चा लेकर मैं क्या करूं? क्यों न इसे इसकी फूफी के घर भेज दूं?"

फिर उसके मन में आया, "अब मेरा रहा कौन है? इतने छोटे बच्चे को दूर देश भेजकर मैं अकेला क्या करूंगा? और बच्चे को भी उस घर में अनजाना महसूस होगा। नहीं, नहीं, मैं इसे अपने पास ही रखूंगा और जैसे हो सके, इसकी परवरिश करूंगा।"

उसने वह नौकरी छोड़ दी और अपने घर चला आया। अपना खुद का काम शुरू किया। लेकिन देखो उसकी बदनसीबी! मार्तिन ने सोचा था, यह लड़का बड़ा होकर मेरे काम में मेरी मदद करेगा। मगर उस लड़के को बुखार आया और वह मौत का शिकार हो गया। मार्तिन ने उसको दफन किया। श्मशान से लौटते समय उसका दिल दुख से इतना भर आया था कि वह सह न सका और मारे दुख के ईश्वर को कोसने लगा: "ऐ भगवान, तुमने मेरे सारे बच्चे मुझसे छीन लिए। फिर मुझे क्यों यहां जिन्दा रखा है? मैं अकेला बूढ़ा अब क्या करूं?"

दुख में उसने चर्च जाना छोड़ दिया।

एक दिन मार्तिन अपने कमरे में गुमसुम बैठा था। रास्ते में जाते-जाते एक पादरी ने उसे देखा और उससे मिलने आया। मार्तिन ने उसके सामने अपना दर्द बयान किया। उसकी आंखों से आंसू झरने लगे, "मैं तो अब जीना नहीं चाहता। ईश्वर मुझे जल्दी अपने पास बुला ले। इस दुनिया में मुझे आशा की एक भी किरण नहीं दीखती। चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है मेरे लिए।"

पादरी ने कहा, "मार्तिन, इस तरह बोलने का तुझे कोई हक नहीं। ईश्वर के कायदे हम क्या जानें? चाहे हम कितनी भी बहस क्यों न करें, लेकिन जो कुछ होता है, उसी की इच्छा से होता है। अगर ईश्वर चाहता है कि तुम्हारे बच्चे मर जायें और तुम जीओ, तो वही होकर रहेगा। जिन बातों पर हमारा बस नहीं, उनके लिए दुख कैसा? मालूम है तुम्हें दुख क्यों होता है?"

"क्यों?"

"तुम अपने ही सुख के लिए जीना चाहते हो।"

"और आदमी किसलिए जीना चाहता है ?" मार्तिन ने पूछा।

"ईश्वर के लिए । वह हमको जिन्दगी देता है, हमें उसके लिए जीना चाहिए। मार्तिन तुम इस तरह जीना सीखो, फिर तुम्हें बिलकुल दुख नहीं होगा। हर बात साफ-साफ दिखाई देगी।"

मार्तिन कुछ देर तक चुप रहा, फिर उसने पूछा, "लेकिन ईश्वर के लिए जीने का तरीका क्या है?"

"यह सब खुद ईश्वर ने ही बताया है। क्या तुम पढ़ सकते हो? यदि पढ़ सकते हो तो बाइबल खरीद लाओ। पढ़ो, उसमें क्या लिखा है।"

पादरी की बात मार्तिन को जंची। उसी दिन दूकान जाकर उसने बाइबल खरीदी और पढ़ने लगा । मन उसमें डूब गया। कभी-कभी तो वह पढ़ाई में इतना डूबा रहता कि सब कुछ भूल जाता। दिए का तेल खतम होता, दिया बुझता, तब कहीं वह किताब बंद करता। दिन-ब-दिन उसका बाइबल पढ़ने का शौक बढ़ता गया।

एक दिन उसने आप-से-आप कहा, "मुझे अब मालूम हुआ कि दूसरों के लिए जीना क्या है।"

उसकी पूरी जिन्दगी बदल गयी। इसके पहले वह छुट्टी के दिन कभी-कभी होटल में जाता, दोस्तों के साथ चाय पीता, कभी-कभार गिलास भर बोदका लेने से भी इन्कार नहीं करता। जब दोस्तों के साथ वहां से निकलता तो कुछ भी अनाप-शनाप बोलता, दूसरों की खिल्ली उड़ाता या जोर-जोर से हंसता। अब उसका वह रूप न रहा। वह शांत, हंसमुख रहने लगा।

एक दिन ऐसा हुआ कि मार्तिन बहुत देरतक पढ़ता रहा। पढ़ने में वह भूख-प्यास भी भूल गया। उसकी आंखों के सामने बाइबल के शब्द नाच रहे थे :

कोई मारे तुम्हें तमाचा
आगे कर दो दूसरा गाल,
छीन ले कोई कोट तुम्हारा
उसे उढ़ा दो अपनी शाल।
कोई तुमसे कुछ भी मांगे
जो चाहे सो सब कुछ दे दो
कोई कुछ ले जाये तुमसे
कभी न उससे तुम वापस लो।
जो चाहो तुम औरों से
'खुद' पहले वैसा बरतो,
बात नहीं जब मेरी मानो
खुदा क्यों कहते हो मुझको ?

जैसे ही मार्तिन ने यह पढ़ा, मन आनंदित हो उठा। उसने आंखों से ऐनक

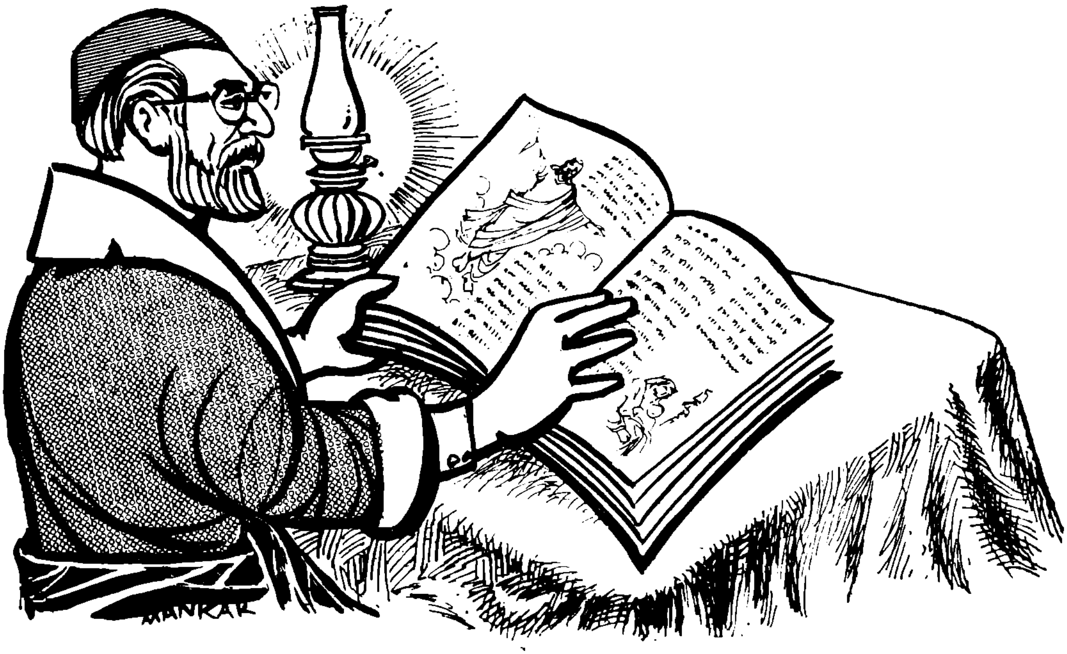

उतारी, बाइबल की किताब परे रखी, और विचार में डूब गया, " क्या मेरा घर भी बिना नींव का है ? मैं भी ईश्वर के कहे मुताबिक कुछ नहीं करता ?"

सोचते-सोचते उसे नींद ने घेर लिया। वहीं मेज पर वह सो गया।

" मार्तिन !,"... एक आवाज आयी।

" कौन है ?," उसने आंखें मलते हुए पूछा।

" मार्तिन ! !," फिर वही आवाज।

" कौन है ?", उसने एक बार फिर जोर से पूछा। दरवाजे तक जाकर देखा। कोई नहीं था।

" मार्तिन, कल रास्ते पर देखना। मैं आऊंगा।"

दिखाई तो कोई नहीं देता था मगर मार्तिन ने ये शब्द अच्छी तरह सुने। एक बार फिर वह दरवाजे से झांक आया। कोई नहीं था। वह सोचने लगा " क्या मैंने ये शब्द सचमुच सुने हैं ? या मैं कोई सपना देख रहा था ?"...

उसकी समझ में कुछ नहीं आया। बत्ती बुझाकर वह सो गया।

सुबह पौ फटते ही वह जाग उठा। हाथ-मुंह धोकर उसने ईश्वर की प्रार्थना की, चूल्हा जलाकर खीर पकायी, और खिड़की के पास बैठकर अपने काम में लग गया। काम करते-करते उसे रात की बात याद आयी। कभी लगता कि उसने कोई सपना ही देखा हो, और कभी लगता कि नहीं, मैंने सचमुच वे शब्द सुने हैं।

इस तरह वह सोच-विचार में डूबा था और उसके हाथ काम कर रहे थे। आंखें खिड़की से आने-जानेवालों को देख रही थीं।

एक पानीवाला मटका लेकर गया, एक मुंशी जी नया बूट पहनकर चल दिए। फिर आया एक सिपाही हाथ में फावड़ा लेकर। मार्तिन ने उसे उसके पुराने जूतों से पहचाना। वह था बूढ़ा स्टेपनिच। पड़ोसवाले ने दया करके उसे अपने घर में रखा था। वह मार्तिन के घर के सामने जमी हुई बर्फ हटा रहा था। मार्तिन ने एक बार उसे देखा और फिर अपने काम में डूब गया। वह सोचने लगा, "मैं शायद बुढ़ापे के कारण पागल होता जा रहा हूं। स्टेपनिच बर्फ हटाने आया है और मैं सोच रहा हूं कि वही ईश्वर है। मुझसे मिलने आया है।"

उसने दस-बारह टांकों की सिलाई पूरी की। लेकिन आज उसका मन ही नहीं लग रहा था अपने काम में। वह फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। उसने देखा स्टेपनिच ने अपना फावड़ा रख दिया था। मार्तिन ने सोचा, "स्टेपनिच शायद आराम करना चाहता है। कितनी ठंडक है। बेचारा बूढ़ा कैसे सह सकेगा इसे, और थका भी इतना है कि बरफ हटाने की ताकत नहीं है इसके दुबले हाथों में। अगर मैं इसे बुलाकर थोड़ी चाय पिला दूं तो?"

मार्तिन ने दरवाजा खोलकर पुकारा, "स्टेपनिच! भाई, जरा अंदर आओ। बिलकुल ठिठुर गये दीखते हो।"

"खुदा तेरा भला करे," स्टेपनिच ने कहा, "मेरे हाथ-पैर जैसे टूटे जा रहे हैं।"

वह अंदर आया। बरफ झटकी और पैर पोंछने लगा। उसने सोचा कहीं फर्श पर गीले निशान न बनें। लेकिन इस कोशिश में वह डगमगाकर नीचे गिर गया।

"रहने दो भैया, मैं फर्श पोंछ लूंगा। तुम बहुत थके हो। बैठो, चाय पी लो।"

मार्तिन ने दो कटोरे चाय के भर दिए। एक मेहमान को दिया, दूसरा अपने मुंह से लगाया। स्टेर्पनिच ने चाय पीकर कटोरा उल्टा किया और तल में बचे हुए शक्कर के दो कण कटोरे पर रख दिए। यह उनका रिवाज था। इसका अर्थ यह था कि मुझे अब नहीं चाहिए। स्टेर्पनिच ने रिवाज के मुताबिक यह कहा और धन्यवाद भी दिया मगर उसकी सूरत से मार्तिन ने जाना कि उसे और चाय चाहिए।

"और एक गिलास ले लो," कहकर मार्तिन ने फिर दोनों गिलास भर दिए। लेकिन चाय पीते समय वह लगातार खिड़की से बाहर झांक रहा था।

"क्या कोई आनेवाला है?", स्टेर्पनिच ने पूछा।

"कोई आनेवाला?"... तुझे कैसे

कहूं ? शायद मेरा पागलपन हो इसलिए शरमा रहा हूं, लेकिन कल रात को मैंने जो सुना उसे पलभर भी भूल नहीं सकता। कौन जाने वह सच था या सपना ! स्टेपनिच, कल रात को मैं बाइबल पढ़ रहा था और कोई मुझसे कह गया– "कल मैं आऊंगा"... दोस्त, मुझे लगता है वह ईश्वर था। मैं उसी की राह देख रहा हूं।"

मार्तिन ने स्टेपनिच का खाली गिलास फिर चाय से भर दिया और कहा, "लो, और एक गिलास पी लो। खुश हो जाओ। मैंने वह आवाज सुनी तो मुझे लगा कि वह इस दुनिया में आता है। भोले-भाले सामान्य लोगों के साथ रहता है। हम जैसे कष्ट करनेवाले पापी लोगों में से ही अपने शिष्य चुनता है। क्योंकि गरीब, दीन, दुबले लोग..."

आगे वह कुछ बोल न सका। वही, रात की आवाज फिर से उसके कानों में गूंजने लगी।

स्टेपनिच ने चाय का गिलास खाली करके जमीन पर रख दिया और आंसू भरी आंखों से मार्तिन को धन्यवाद देकर चला गया।

उसके बाद आयी एक औरत। देहाती जूते, फटे-पुराने कपड़े। वह दीवार से सटकर खड़ी हो गयी। मार्तिन खिड़की से देख ही रहा था। उसने सोचा, "बेचारी, अनजान है कोई। साथ में छोटा बच्चा भी है। पहचाना नहीं मैंने। गरीब मालूम होती है।"

उस औरत ने बच्चे को अपने दोनों हाथों में लपेट लिया। वह उसे हवा के झोंकों से बचाना चाहती थी। दूसरा था ही क्या उसके पास जो बच्चे को उढ़ा देती। बच्चा रोने लगा। मां उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी लेकिन वह और भी जोरों से रो पड़ा।

मार्तिन उठा। दरवाजे से बाहर निकला। पटरी पर जाकर उसने पुकारा, "बेटी, ओ मेरी बेटी !", औरत ने सुना और पीछे मुड़कर देखा।

"इतनी सर्दी में बच्चे को लेकर वहां क्यों खड़ी हो बेटी ? अंदर आओ। बच्चा मारे ठंड के रो रहा है। आओ, इस तरफ आ जाओ।"

वह भीतर आ गयी।

मार्तिन ने कहा, "बैठो, इस बिस्तर पर। अंगीठी के पास बैठो, और बच्चे को दूध पिलाओ।"

" इतनी सर्दी में बच्चे को लेकर वहां क्यों खड़ी हो बेटी ?
आओ, इस तरफ आ जाओ !"

"बाबा, दूध कहां है जो बच्चे को पिलाऊं? कल से मैंने कुछ खाया भी नहीं।"

मार्तिन ने सिर हिलाया। वह सबकुछ समझ गया। ले आया एक डबल रोटी और गाजर का साग।

"खा लो, बेटी, आराम से खा लो। मैं तुम्हारे बच्चे को सम्हालूंगा। मेरे भी बच्चे थे। उन्हें सम्हालना मैं अच्छी तरह जानता हूं। तुम कोई चिंता मत करो।"

मेज के पास बैठकर वह औरत खाना खाने लगी। मार्तिन ने बच्चे को बिस्तर पर लिटा दिया, और खुद उसके पास बैठा। उसने अपनी उंगली बच्चे के मुंह के पास बढ़ा दी थी, फिर पीछे खींच ली। फिर पास ले गया, फिर दूर हटायी। बच्चे को पास आनेवाली और दूर जानेवाली उंगली का हिलना इतना मजेदार लगा कि वह खिलखिलाकर हंस पड़ा। मार्तिन बड़ा खुश हुआ।

बच्चे की मां खाते-खाते अपनी कहानी सुना रही थी, "मैं एक सिपाही की बीवी हूं। आठ महीने पहले फौजवालों ने मेरे पति को न जाने कहां भेज दिया है। इतने दिनों में मुझे उनकी कोई खबर नहीं मिली। मैं किसी के घर खाना पकाती थी। लेकिन यह बच्चा पैदा हुआ और उन लोगों ने बच्चे के साथ मुझे वहां रखने से इन्कार कर दिया। मैं वहां से निकली और आजतक मारी-मारी फिरती हूं। कोई घर ढूंढ़ रही हूं रहने के लिए।"

मार्तिन नें गहरी सांस ली, "तेरे पास कोई गरम कपड़ा नहीं है?"

"कहां से आता बाबा? एक शाल थी वह कल ही मैंने पच्चीस कोपेक में गिरवी रख दी है।"

खाना खाकर उसने अपने बच्चे को उठाया। मार्तिन ने कमरे में चारों तरफ नजर डाली। रस्सी पर एक पुराना कंबल लटका हुआ था। उसने उसे रस्सी पर से खींचते हुए कहा, "बेटी, यह कम्बल है तो पुराना, मगर बच्चे को इसमें लपेट सकोगी। ले लो इसे।"

बच्चे की मां ने एक बार कम्बल की ओर देखा फिर मार्तिन की ओर देखा और फूट-फूटकर रोने लगी। मार्तिन वहां से उठा, टटोलकर अपनी संदूक से उसने कुछ निकाला और उस औरत के सामने आ बैठा।

"दद्दा जी, भगवान आपका भला करे। सचमुच प्रभु यीशु ने ही मुझे आपकी खिड़की के पास भेज दिया होगा।

नहीं तो मेरा बच्चा आज ठिठुरकर मर जाता । मैं घर से निकली तब इतनी सर्दी नहीं थी । मगर अब देखा, जाड़ा हड्डी काट रहा है ।"

हंसते हुए मार्तिन ने कहा, "सच कहती हो बेटी । प्रभु यीशु ने ही मुझे आज्ञा दी है । मैंने कोई इत्तेफाक से बाहर नहीं देखा था।"

"यह रख लो," मार्तिन ने उसके हाथ में संदूक से निकाले पचीस कोपेक थमा दिए, "अपनी शाल गिरवी रखी है न तुमने । उसे छुड़ा लो।"

वह औरत रोते-रोते वहां से चल दी । मार्तिन ने उसके बाद कुछ खाना खाया और फिर से काम में जुट गया । काम तो कर रहा था लेकिन खिड़की पर जब कोई छाया दीखती, वह बाहर झांकना न भूलता ।

मार्तिन ने देखा, सेव बेंचनेवाली बूढ़ी आयी । वह खिड़की के पास आयी और उसने अपने सेवों की टोकरी एक खंभे पर रख दी । उसकी पीठ पर लकड़ी के छिलकों से भरा बोरा था । कहीं कोई इमारत बन रही होगी, वहीं से छिलके जमा किए थे उसने ।

"हाय कैसे चुभते हैं !", कहकर बूढ़ी ने बोरा पीठ पर से उतारा और उसे हिलाने लगी । वह बोरा हिला रही थी कि इतने में एक लड़का दौड़ता हुआ आया । उसने टोकरी से एक सेव उठा लिया । बुढ़िया ने झपट कर उसकी बांह पकड़ ली, "बदमाश ! कमबख्त !!"

"मुझे छोड़ दो, छोड़ दो", कहता हुआ लड़का छटपटाने लगा । बूढ़ी ने उसके दोनों हाथ पकड़े, उसकी टोपी पटक दी और उसके बाल कसकर झकझोर दिए । लड़का चिल्ला रहा था और बूढ़ी गालियां दे रही थी ।

मार्तिन ने खिड़की से सब देखा । हाथ का काम नीचे रखा और दौड़ता हुआ बाहर आया । सीढ़ियों पर वह लड़खड़ाया, उसकी ऐनक नीचे गिरी लेकिन वह दौड़ता हुआ रास्ते पर आया । बूढ़ी, लड़के का बाल खींचते हुए उसे डांट रही थी, "तुझे पुलिस के हवाले करती हूं ।" लड़का अपने को छुड़ाने की कोशिश करता हुआ चिल्ला रहा था, "मैंने सेव नहीं लिया । मुझे क्यों मारती हो ? छोड़ो, मुझे छोड़ो ।"

मार्तिन ने दोनों को एक-दूसरे से अलग किया । उसने बच्चे का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "बूढ़ी मां, जाने दो इसे, प्रभु यीशु के लिए इसे माफ करो ।"

"नहीं, मैं इसे ऐसा सबक सिखाऊंगी कि यह कभी नहीं भूलेगा। इस गुंडे को मैं पुलिस के हवाले करके ही रहूंगी।"

मार्तिन फिर से बूढ़ी को मनाने लगा, "जाने दो बूढ़ी मां, वह फिर कभी ऐसा नहीं करेगा। सच कहता हूं, प्रभु के लिए इसे छोड़ दो।"

बूढ़ी ने लड़के के बाल छोड़ दिए। वह लड़का भागना ही चाहता था कि मार्तिन ने कहा, "ऐ बच्चे, बूढ़ी मां से माफी मांग लो। और फिर कभी ऐसा मत करना। मैंने तुझे देखा है सेव उठाते।"

लड़का रोने लगा, माफी मांगने लगा। मार्तिन ने टोकरी से एक सेव उठा कर बच्चे के हाथ में थमा दिया और कहा, "हां, यह ठीक हुआ। यह लो सेव। बूढ़ी मां, इसके पैसे मैं दूंगा तुम्हें।"

"इसी तरह तुम लोग इन गुंडे बच्चों को बिगाड़ते हो," बूढ़ी ने कहा, "इसे दस-पांच तमाचे जमा देते तो आठ-दस दिन नहीं भूलता।"

"बूढ़ी मां, यह तो हमारा रिवाज ठहरा, ईश्वर का नहीं। बच्चे को अगर हम इस बुरे काम के लिए तमाचा मारें तो हमारे बड़े पापों के लिए हमें कौन-सी सजा दी जायेगी?"

बूढ़ी कुछ बोल न सकी। मार्तिन ने आगे कहा, "बूढ़ी मां, यह बच्चा क्या सोचने की ताकत रखता है? ऐसे बच्चों को क्षमा करना सबसे जरूरी है। ईश्वर कहता है, क्षमा करो नहीं तो हमें कोई क्षमा नहीं करेगा।"

बूढ़ी ने सिर हिलाकर लंबी सास भरी, "सच कहते हो बाबा। मगर ये बच्चे तो बहुत ही बिगड़ते जा रहे हैं।"

"तब तो हम बड़ों को चाहिए कि उन्हें अच्छा रास्ता दिखाएं। तुम्हारे भी कोई पोता होगा, समझ लो कि उसने यह सेव..."

"ठीक है बाबा, ठीक है," अपने पोते की याद आते ही बूढ़ी का गला भर आया। बोली, "इस लड़के ने भी बचपना ही तो किया था, और कुछ नहीं। ईश्वर उसकी मदद करे।"

बूढ़ी ने सेव की टोकरी माथे पर रखी और छिलकों का बोरा पीठ पर चढ़ा ही रही थी कि लड़का बोला, "बूढ़ी मां, ठहरो, मैं उठाता हूं अपनी पीठ पर इसे। मुझे भी इसी रास्ते से जाना है।"

बूढ़ी खुश हुई और बोरा लड़के की पीठ पर चढ़ाया। दोनों साथ-साथ चल दिए। बूढ़ी सेव के पैसे मार्तिन से लेना ही भूल गयी। मार्तिन ने देखा, दोनों

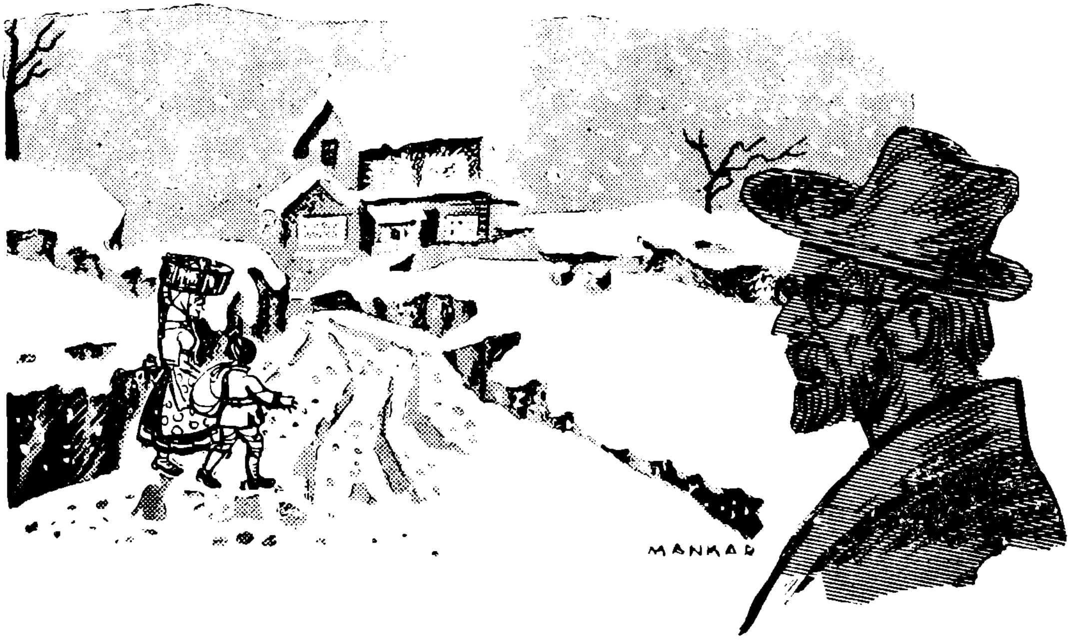

आपस में बातें करते, साथ-साथ जा रहे हैं। वह खुश हुआ।

मार्तिन वापस घर आया। उसे सीढ़ियों पर अपनी ऐनक मिली, "अरे, यह बिलकुल टूटी नहीं" उसने ऐनक आंखों पर चढ़ा ली और कमरे में आकर काम में जुट गया। अब चमड़े के सुराख देखना मुश्किल हो गया था। उसने देखा, अंधेरा फैला है और बत्तीवाला रास्ते पर बत्तियां जलाता जा रहा है।

मार्तिन ने घर का दिया जलाया, ऊपर लटकाया और काम हाथ में लिया। एक जूते की सिलाई पूरी करके उसे जांच लिया। काम का सामान अपनी-अपनी जगह रखा। ताक पर से दिया उतारकर मेज पर रखा। अलमारी से बाइबल की किताब निकाली। किताब खोलते ही उसे कल का सपना याद आया।

"कहां आया ईश्वर ?", उसने मन-ही-मन में सवाल किया, और उसी क्षण उसने किसी के पैरों की आहट सुनी। उसे लगा, पीछे से कोई चलता आ रहा है। मुड़कर देखा तो एक अंधेरे कोने में कई लोग खड़े थे। वह उन्हें पहचान तो न सका लेकिन उसके कानों में किसी की आवाज गूंज उठी, "मार्तिन, मार्तिन, तुमने मुझे पहचाना नहीं ?"

"कौन हो तुम ?"

" मैं तो वही हूं ", आवाज ने कहा और अंधेरे कोने से स्टेपनिच आगे बढ़ा और हंसता हुआ बादलों की तरह गायब हो गया। फिर वहां कोई नहीं था।

" मैं तो वही हूं ", फिर से आवाज आयी। अंधेरे कोने से, अपने बच्चे को सोने से लगाये, वही औरत आगे बढ़ी। वह हंस रही थी। बच्चा भी हंस रहा था। फिर वे दोनों भी अदृश्य हो गये।

" मैं तो वही हूं ", फिर से एक आवाज आयी। बूढ़ी मां और लड़का सेव की टोकरी के साथ सामने आये। वे भी दोनों हंसते-हंसते गुम हो गये। मार्तिन को समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने अपनी ऐनक आंखों पर चढ़ाई और बाइबल का जो पन्ना सामने खुला था, वहीं से पढ़ना शुरू किया :

मैं था प्यासा,
तूने मुझे पिलाया–
मैं था भूखा,
तूने मुझे खिलाया–
मैं था राही भूला-भटका
घर में अपने तूने ही तो
दिया आसरा, बैठाया।
वह सब मिला मुझे ही
जो मेरे इन बच्चों को
तूने बड़े प्यार से दिया।

अब मार्तिन का दिल खुशी से भर आया। उसको उन सबके आने का अर्थ मालूम हुआ। उसका सपना सच्चा बन गया था।

" ईश्वर सचमुच मेरे पास आया था और मेरी खुशनसीबी यह है कि मैंने उसका स्वागत किया", मार्तिन की आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। ●

(लेव तालस्तोय की कथा पर आधारित)

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938 में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।

बच्चों की कहानियां

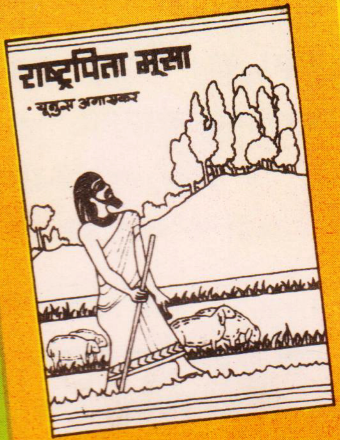

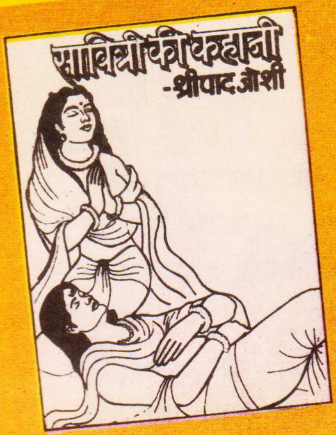

एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली -११० ०५५